

## भारत में मुद्रास्फीति का बदलता गतिसिद्धांत \*

### दीपक मोहंती

मैं मोतीलाल नेहरू राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एमएनएनआईटी) को धन्यवाद देता हूँ कि उन्होंने मुझे लब्धप्रतिष्ठ लोगों की इस सभा को संबोधित करने का अवसर प्रदान किया। मैं मुद्रास्फीति के संबंध में कुछ कहना चाहता हूँ जो हम सभी के लिए चिंता करने का विषय है। मुद्रास्फीति क्या है ? सरल शब्दों में कहा जाये तो मुद्रास्फीति समग्र कीमत-स्तर में सतत बढ़ोतरी होना है। वस्तुओं और सेवाओं की कीमतों में सापेक्षिक परिवर्तन होना बाजार अर्थव्यवस्था का वांछनीय गुण होता है क्योंकि यह उत्पादकता परिवर्तन को और माँग-आपूर्ति स्थिति को प्रतिबिंबित करता है। तथापि जब इस प्रक्रिया का रूपांतरण समग्र कीमत-स्तर में तेजी में होता है तब हमें चिंता करने की आवश्यकता होती है क्योंकि मुद्रास्फीति अनेक समाजार्थिक लागतों को अधिरोपित करती है।

हेडलाइन थोक मूल्य सूचकांक (डब्ल्यूपीआई) मुद्रास्फीति वर्ष 2010-11 में औसतन 9.6 प्रतिशत थी जबकि पिछले दशक में यह प्रतिवर्ष 5.3 प्रतिशत रही थी। इसी प्रकार औसत उपभोक्ता मूल्य सूचकांक जिसे औद्योगिक कामगारों के लिए उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपीआई-आइडब्ल्यू) द्वारा मापा जाता है, वर्ष 2010-11 में 10.5 प्रतिशत पर इससे भी ऊँची थी जबकि पिछले दशक में यह प्रति वर्ष 5.9 प्रतिशत रही थी। इसके अतिरिक्त, मुद्रास्फीति का ऊँचा स्तर वर्ष 2011-12 की पहली तिमाही में भी दृढ़ बना रहा। स्फीतिकारक दबाव की प्रतिक्रिया में रिजर्व बैंक ने नीति रेपो दर को 11 बार बढ़ाया और मार्च 2010 में जो दर 4.75 प्रतिशत पर नीचे थी वह जुलाई 2011 तक बढ़ा कर 8.00 प्रतिशत कर दी गयी। यह उम्मीद है कि मुद्रास्फीति इस वर्ष के अंत तक कम होगी।

मुद्रास्फीति इतनी ऊँची क्यों हुई और इतने लंबे समय तक किस प्रकार टिकी रही ? यह आज की मेरी वार्ता की विषय-वस्तु है। अपनी प्रस्तुति में मैं निम्नलिखित प्रश्नों पर ध्यान दूँगा : क्या भारत अपने हाल की मुद्रास्फीति के संदर्भ में प्रमुख देशों के बीच बहिर्वासी है ? क्या मुद्रास्फीति की प्रक्रिया में परिवर्तन हुआ है ? कारण संबंधी

उपादान क्या हैं -वैश्विक और घरेलू तथा आपूर्ति और माँग ? मैं भविष्य में मुद्रास्फीति के गति सिद्धांत का प्रबंध करने के संबंध में कुछ विचारों के साथ अपनी बातों का उपसंहार करूँगा।

### क्या भारत अपने मुद्रास्फीति कार्यसंपादन के लिए प्रमुख देशों के बीच बहिर्वासी है ?

हमारे लिए उस पृष्ठभूमि को समझना आवश्यक है, जिसमें हम मुद्रास्फीति को अब फिर से उभरता हुआ अनुभव कर रहे हैं। पिछले दशक में, उन्नत देशों और उभरती एवं विकासशील अर्थव्यवस्थाओं दोनों में मुद्रास्फीति न्यून थी, जब तक कि वैश्विक संकट अनावृत्त नहीं हुआ था। इसके फलस्वरूप वैश्विक अर्थव्यवस्था में मंदी आयी और वैश्विक उत्पादन में वर्ष 2009 में 0.5 प्रतिशत तक गिरावट आयी। तथापि वैश्विक उत्पादन वर्ष 2010 में पुनः बढ़ कर 5.0 प्रतिशत हो गया।

जैसे-जैसे वैश्विक अर्थव्यवस्था वैश्विक वित्तीय संकट के बुरे प्रभाव से उबरती गयी वैसे-वैसे उभरती और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में मुद्रास्फीति में तेजी आती गयी। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि वैश्विक पुनःप्राप्ति अधिकतर उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं (इएमई) द्वारा प्रेरित थी जिसे द्विविध गति पुनःप्राप्ति कहा गया - इएमई में तीव्रतर वृद्धि और उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में मंथर वृद्धि। जैसे-जैसे उत्पादन अंतराल समाप्त होता गया, ईएमई में स्फीतिकारक दबाव बढ़ने लगा, विशेष रूप से एशिया में। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आइएमएफ) के अनुसार विकासशील एशिया में उपभोक्ता मूल्य मुद्रास्फीति जो वर्ष 2009 में 3.1 प्रतिशत थी वह लगभग दुगुनी हो कर वर्ष 2010 में 6.0 प्रतिशत हो गयी और अनुमान है कि वर्ष 2011 में यह इसी स्तर के इर्द-गिर्द रहेगी। नवीनतम आँकड़े बताते हैं कि तेज गति से बढ़ती ब्रिक्स<sup>1</sup> अर्थव्यवस्थाओं में मुद्रास्फीति ऊँची बनी रही है (सारणी 1)।

### वैश्विक कारक

सुधार के साथ, वैश्विक पण्य-कीमतें उछलीं जो ईएमई में पण्य-तीव्रता वृद्धि के उच्चतर स्तर के कारण हुई। वैश्विक अतिरिक्त

\* 13 अगस्त 2011 को मोतीलाल नेहरू नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (एमएनएनआईटी), इलाहाबाद में श्री दीपक मोहंती, कार्यपालक निदेशक, भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा दिया गया भाषण। अभिमान दास, संजीव बोर्देलोइ और मंजूषा सेनापति द्वारा प्रदान की गयी सहायता के लिए आभार व्यक्त किया जाता है।

<sup>1</sup> ब्राजील, रूस, भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका

**सारणी 1 : ब्रिक्स देशों में मुद्रास्फीति\***

देश	2010 (औसत)	2011 (नवीनतम) <sup>@</sup>
ब्राजील	5.0	6.9
रूस	6.9	9.0
भारत	9.6	9.4
चीन	3.3	6.5
दक्षिण अफ्रीका	4.3	5.0

\* डब्ल्यूपीआइ भारत के लिए और सीपीआइ अन्य देशों के लिए

<sup>@</sup> जून /जुलाई (वर्ष-दर-वर्ष)

चलनिधि<sup>2</sup> को देखते हुए पण्यों के वित्तीयकरण का भी एक तत्व इसमें शामिल था। विश्व के अनेक हिस्सों में प्रतिकूल मौसम के चलते फसल-हानि हुई जिसके साथ जैव ईंधन की ओर खाद्यान्नों का बढ़ा हुआ विपथन वैश्विक खाद्य-कीमतों पर दबाव डालने लगा। इस प्रकार वैश्विक पण्य-कीमतें जिनमें खाद्य कीमतें शामिल हैं, तेजी से बढ़ीं। उदाहरण के लिए आइएमएफ पण्य सूचकांक वर्ष 2010 में 24 प्रतिशत तक बढ़े जो वर्ष 2009 में हुई 43 प्रतिशत बढ़ोतरी के अतिरिक्त था। यह पुनः दिसंबर 2010-अप्रैल 2011 में 20 प्रतिशत तक बढ़ा लेकिन जून-जुलाई 2011 के दौरान यह लगभग 2 प्रतिशत नरम हुआ। पिछले कुछ महीनों में इसमें नरमी आने पर भी इस बात को समझना महत्वपूर्ण है कि पण्य कीमतों का वर्तमान स्तर ढाई वर्ष पहले की तुलना में लगभग दुगुना है (सारणी 2)।

पण्य-कीमतों में बढ़ोतरी ने विभिन्न देशों को भिन्न-भिन्न ढंग से प्रभावित किया है जो इस पर निर्भर करता है कि वे पण्य का आयात करने वाले हैं या निर्यात करने वाले हैं। भारत पण्यों का निवल आयात करने वाला होने के कारण इसकी घरेलू मुद्रास्फीति पर प्रतिकूल प्रभाव अधिक तगड़ा रहा है। विकासशील और उभरती अर्थव्यवस्थाओं में मुद्रास्फीति में बढ़ोतरी उत्पादन अंतराल के समाप्त होने और पण्य कीमतों में तेज वृद्धि के साथ हुई। इस संबंध में भारत अपवाद नहीं है। लेकिन अनेक ईएमई की मुद्रास्फीति की तुलना में भारत में मुद्रास्फीति

**सारणी 2 : वैश्विक पण्य कीमतें**

(आइएमएफ प्राथमिक पण्य सूचकांक :2005=100)

	दिसं.-08	दिसं.-09	दिसं.-10	अप्रैल-11	जुलाई-11
सभी पण्य	98.4	140.9	174.7	209.9	198.9
खाद्यान्न	119.6	139.5	176.4	190.9	180.3
पेय	132.5	176.7	192.6	216.6	210.0
कच्चा कृषि माल	87.6	111.2	146.9	171.6	161.5
धातुएँ	107.5	176.8	233.6	250.1	242.2
ऊर्जा	91.6	137.9	167.1	212.6	200.7

<sup>2</sup> जबकि मुद्रास्फीति के संबंध में पण्य बाजारों में वित्तीय निवेश की भूमिका के बारे में लोगों में असहमति है, पण्य-निधियों में वित्तीय प्रवाह विशिष्ट रूप से उच्चतर पण्य कीमतों के साथ बढ़ते हैं जिससे कीमत-दबाव और बढ़ता है।

का स्तर ऊंचा बना रहा है। यह इंगित करता है कि वैश्विक कारकों के अतिरिक्त घरेलू कारकों का काफी प्रभाव भारत में मुद्रास्फीति के प्रक्षेप-पथ पर हुआ है।

**क्या मुद्रास्फीति-प्रक्रिया परिवर्तित हुई है ?**

भारत में, हमारे पास बहुविध मूल्य सूचकांक हैं - 6 उपभोक्ता मूल्य सूचकांक और एक थोक मूल्य सूचकांक (डब्ल्यूपीआइ)। जबकि रिजर्व बैंक सभी मूल्य सूचकांकों की जाँच सकल और भन्न-भिन्न दोनों स्तरो पर करता है, डब्ल्यूपीआइ में परिवर्तनों को नीति की स्पष्टता के लिए हेडलाइन मुद्रास्फीति के रूप में माना जाता है। डब्ल्यूपीआइ के भीतर, खाद्येतर विनिर्मित उत्पाद मुद्रास्फीति को कोर मुद्रास्फीति<sup>3</sup> माना जाता है।

मुद्रास्फीति के किसी भी माप के अनुसार भारत एक संयत मुद्रास्फीति वाला देश है हालाँकि कभी-कभी मुद्रास्फीति दहाई अंक को छू जाती है। परंपरागत दीर्घावधि मुद्रास्फीति दर लगभग 7.5 प्रतिशत थी। लेकिन महत्वपूर्ण रूप से 2000 के दशक में मुद्रास्फीति काफी संयत रही थी। वार्षिक औसत मुद्रास्फीति दर लगभग 5.5 प्रतिशत थी भले ही कोई भी मुद्रास्फीति सूचकांक चाहे डब्ल्यूपीआइ या सीपीआइ को लिया गया हो। इससे यह सवाल उठता है कि क्या मुद्रास्फीति के गतिसिद्धांत में 2000 के दशक में परिवर्तन हुआ? मासिक डब्ल्यूपीआइ मुद्रास्फीति के आँकड़े इंगित करते हैं कि 2000 के दशक के मध्य में मुद्रास्फीति-दर में एक संरचनात्मक भंग<sup>4</sup> हुआ था, जिसमें दशक के उत्तरार्ध में मुद्रास्फीति की दर ऊँची हुई थी (चार्ट 1)।

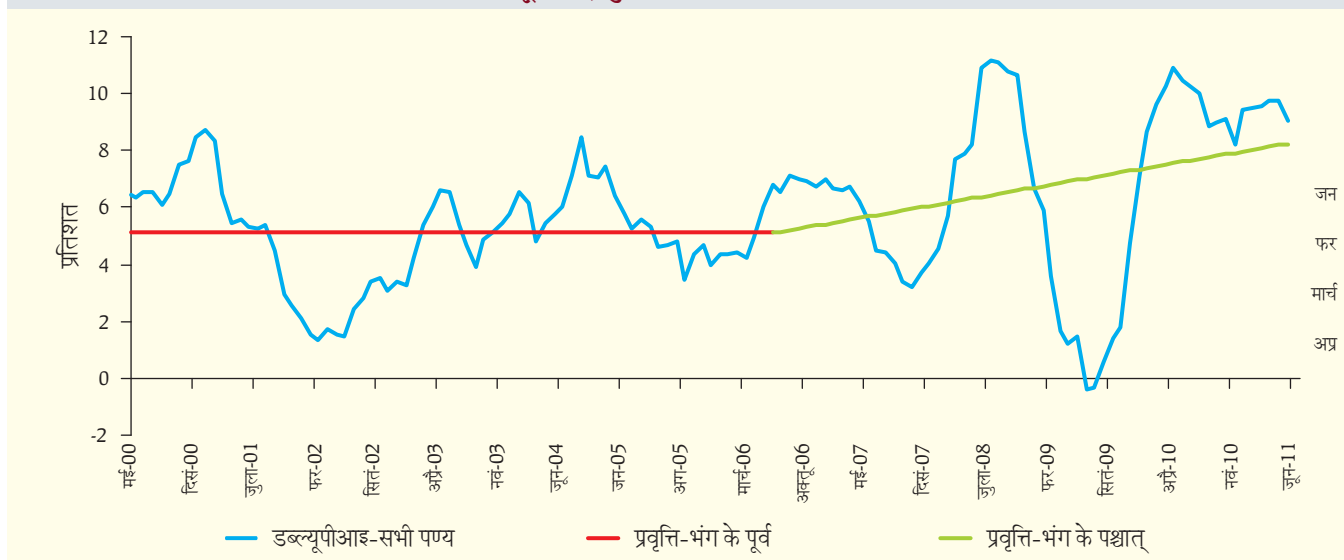
औसत डब्ल्यूपीआइ मुद्रास्फीति जो 2000 के दशक के प्रथमार्ध में 5.2 प्रतिशत थी वह उत्तरार्ध में बढ़ कर 5.5 प्रतिशत हो गयी। इसमें अधिकतर योगदान करने वाली थी प्राथमिक खाद्य-मुद्रास्फीति। वास्तव में कोर खाद्येतर विनिर्मित उत्पाद मुद्रास्फीति नरम हो कर 4.3 प्रतिशत से 3.9 प्रतिशत हो गयी। 2000 के दशक के मध्य में संरचनात्मक भंग किसने कराया ? भिन्न-भिन्न किस्म के मूल्यांकन इंगित करते हैं कि मुद्रास्फीति की प्रवृत्ति में हुए इस परिवर्तन में अधिकतर योगदान प्रोटीन मदों ने किया (सारणी 3)।

2000 के दशक के उत्तरार्ध में न केवल औसत खाद्य कीमतें बढ़ीं बल्कि वे अधिक अस्थिर भी थीं (सारणी 4)।

<sup>3</sup> कोर मुद्रास्फीति का अनुमान लगाने में सामान्यतः हेडलाइन मुद्रास्फीति के अस्थिर खाद्य एवं ईंधन अवयव को शामिल नहीं किया जाता है, हालाँकि कोर मुद्रास्फीति का अनुमान लगाने के लिए विविध सांख्यिकीय पद्धतियाँ हैं। विश्लेषणात्मक रूप से, कोर मुद्रास्फीति को माँग-स्थितियों का संकेतक माना जाता है।

<sup>4</sup> बाइ-पेरोन परीक्षण द्वारा अनुमान लगाया गया।

चार्ट 1 : डब्ल्यूपीआइ मुद्रास्फीति संरचनात्मक भंग दर्शाती है



सारणी 3 : औसत डब्ल्यूपीआइ मुद्रास्फीति

समूह / उप समूह	(प्रतिशत में)				
	2001-2010	2001-2005	2006-2010	2010-11	ति1: 2011-12
डब्ल्यूपीआइ	5.4	5.2	5.5	9.6	9.4
प्राथमिक खाद्य वस्तुएँ (14.3)	5.8	2.4	9.2	15.8	9.1
प्रोटीन (6.4)	6.3	3.5	9.0	20.5	5.9
दूध (3.2)	6.3	4.5	7.9	20.6	7.3
अंडा, मांस और मछली (2.4)	5.6	2.3	8.8	26.6	9.0
औद्योगिक कच्चा माल (16.2)	7.9	8.4	7.4	17.2	16.5
खाद्येतर विनिर्मित उत्पाद (55.0)	4.0	4.2	3.9	6.1	7.2

कोष्ठक के आँकड़े डब्ल्यूपीआइ में भारांक के घटक हैं

### संरचनात्मक खाद्य-मुद्रास्फीति

खाद्य कीमतों में जो कि आपूर्ति आघातों के अधीन होती हैं, अस्थिर होने की प्रवृत्ति होती है। उदाहरण के लिए मानसून का महत्वपूर्ण संबंध घरेलू खाद्य-कीमतों की प्रवृत्ति से होता है। खाद्य-कीमतों की तीक्ष्णता सामान्यतः घटती है क्योंकि वह अल्पकालिक होती है। तथापि अनुभवमूलक साक्ष्य यह इंगित करता है कि प्रोटीनयुक्त वस्तुओं में

सारणी 4 : औसत और डब्ल्यूपीआइ मुद्रास्फीति में अस्थिरता

समूह / उप समूह	(प्रतिशत में)					
	माध्य		मानक विचलन		परिवर्तन गुणांक	
	भंग के पूर्व	भंग के पश्चात्	भंग के पूर्व	भंग के पश्चात्	भंग के पूर्व	भंग के पश्चात्
प्राथमिक खाद्य वस्तुएँ	3.5	10.6	0.4	3.8	11.6	35.9
प्रोटीन	3.8	9.9	1.3	4.8	33.6	48.3
दूध	4.3	10.3	1.5	5.0	35.4	48.4
अंडा, मांस और मछली	2.6	12.0	1.2	6.4	45.5	53.5

मुद्रास्फीति दृढ़<sup>5</sup> बन गयी है। यह बताता है कि प्रोटीन-मुद्रास्फीति ने संरचनात्मक लक्षण ग्रहण कर लिया है और यह अंशतः माँग-जन्य कारकों से प्रेरित होती है। प्रोटीन-वर्ग में दालों और 'अंडे, मांस और मछली' की कीमतों में दृढ़ता कम थी लेकिन दूध में ऊँची थी। इस प्रकार प्रोटीन मुद्रास्फीति की दृढ़ता में 2000 के दशक के उत्तरार्ध में मुद्रास्फीति के गतिसिद्धांत में परिवर्तन हुआ है। प्रोटीन की माँग में बढ़ोतरी से ऐसा लगता है कि यह लोगों की बढ़ती समृद्धि के परिणामस्वरूप हुआ है (गोकर्ण, 2010)<sup>6</sup>। इस प्रक्रिया में और अधिक वृद्धि वर्ष 2010-11 के दौरान नवीकृत वैश्विक खाद्य-कीमत के आघात द्वारा हुई। संसाधित खाद्य वस्तुओं में खाद्य-तेलों की मुद्रास्फीति में दृढ़ता ऊँची थी (सारणी 5)।

### अंतरराष्ट्रीय कीमत-अंतरण

जबकि प्रोटीन-मद में मुद्रास्फीति की दृढ़ता बढ़ी है, इसका समग्र डब्ल्यूपीआइ मुद्रास्फीति में हिस्सा अभी भी कम है। समग्र मुद्रास्फीति

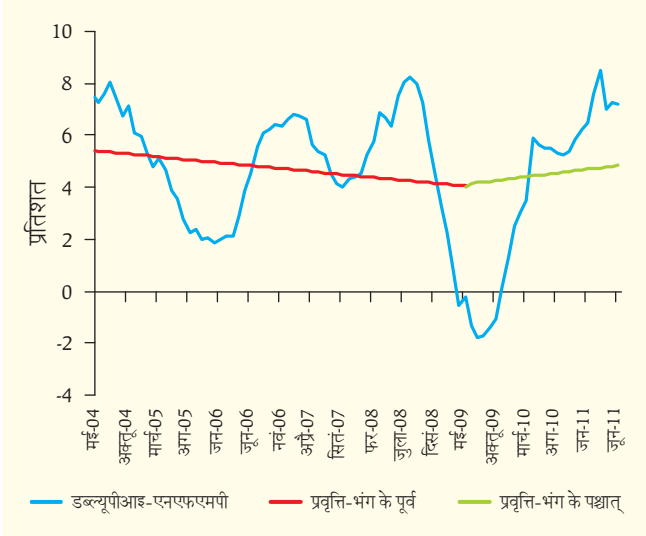
सारणी 5 : मुद्रास्फीति की दृढ़ता

पण्य / उप समूह	एआर गुणांक का योग
<b>खाद्यान्न</b>	
प्रोटीन मदें	0.58
दूध	0.81
खाद्य तेल	0.56
<b>खाद्येतर</b>	
खाद्येतर विनिर्मित उत्पाद	0.69
औद्योगिक कच्चा माल	0.55
खाद्येतर वस्तुएँ	0.56

<sup>5</sup> दृढ़ता का अनुमान प्रासंगिक मदों की मुद्रास्फीति श्रृंखला के ऑटोरिग्रेसिव गुणांकों के योग के रूप में लगाया जाता है : किसी गुणांक के 0.5 से अधिक होने को दृढ़ता के संकेत के रूप में माना जाता है

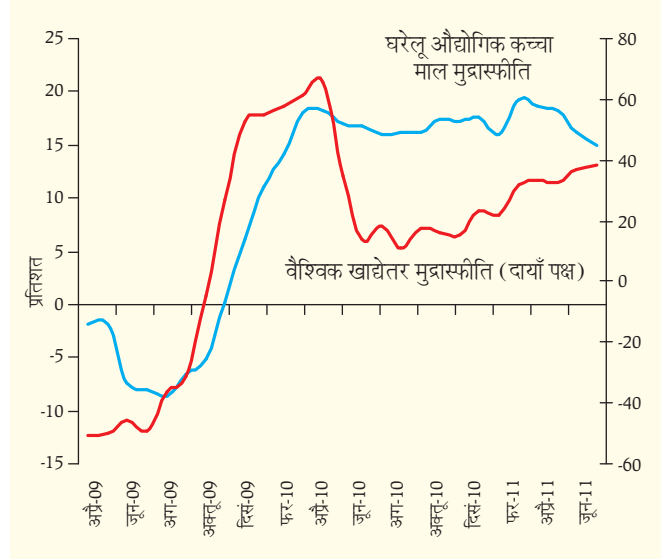
<sup>6</sup> "दि प्राइस ऑफ प्रोटीन" : 26 अक्टूबर 2010 को आइजीआइडीआर, मुम्बई में डॉ.किरीट पारिख के सम्मान में आयोजित सम्मेलन में दिया गया उद्घाटन भाषण

**चार्ट 2 : खाद्येतर विनिर्मित उत्पाद मुद्रास्फीति प्रवृत्ति में बदलाव**



के प्रक्षेप-पथ के लिए जो बात अधिक महत्वपूर्ण है, वह है खाद्येतर विनिर्मित उत्पाद मुद्रास्फीति जिसका डब्ल्यूपीआइ में 55.0 प्रतिशत का उच्चतर भारांक है। इसकी औसत दर 2000 के दशक में 4.0 प्रतिशत रही जिसमें उत्तरार्ध में थोड़ी नरमी दिखाई दी (सारणी 3)। बाद में वर्ष 2010-11 और 2011-12 में अब तक तेज वृद्धि देखी गयी है। खाद्येतर विनिर्मित उत्पाद मुद्रास्फीति वर्ष 2009-10 के मध्य तक एक बड़ा संरचनात्मक भंग दर्शाती है - यह वह समय है जब पण्य-कीमतें उछली थीं (चार्ट 2)। इसने भी यह सवाल उठाया है :

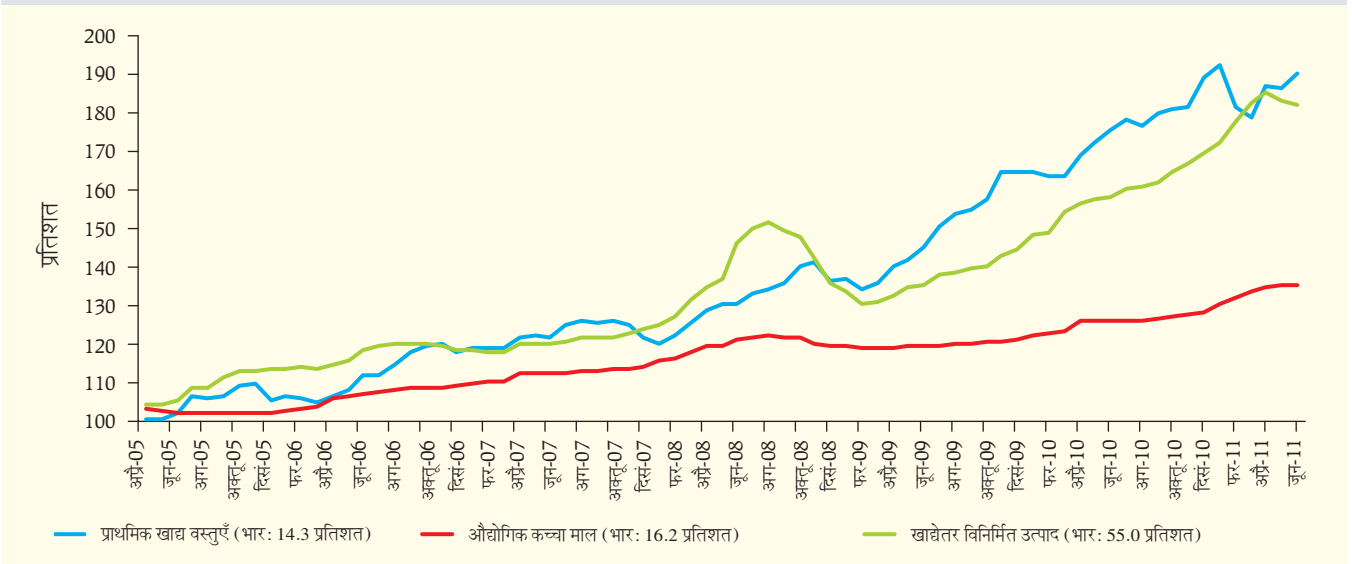
**चार्ट 4 : वैश्विक मूल्य वृद्धि से पास थ्रू**



क्या खाद्येतर विनिर्मित उत्पाद मुद्रास्फीति एक महत्वपूर्ण मुद्रास्फीति है?

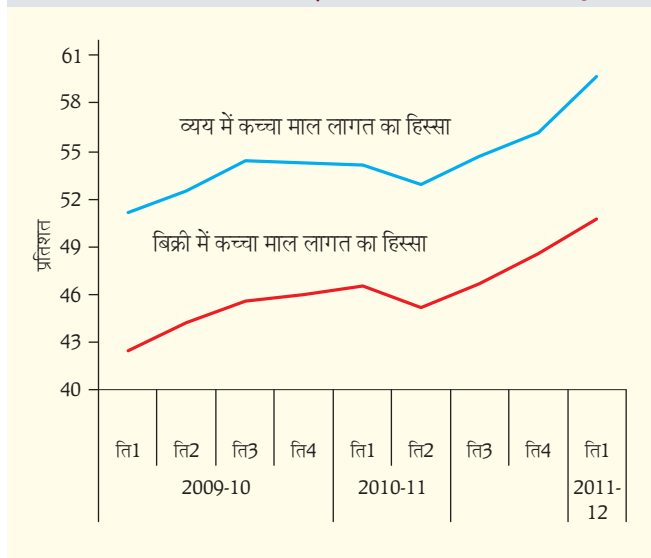
पुनः, विश्लेषण करने से पता चलता है कि औद्योगिक कच्चा माल<sup>7</sup> कीमतों में भी वर्ष 2009 के प्रारंभ में संरचनात्मक भंग देखा गया और औसत कीमत-वृद्धि ऊँची और अस्थिर रही (चार्ट 3)। इसके अतिरिक्त खाद्येतर अंतरराष्ट्रीय पण्य कीमतों से घरेलू कच्चा माल कीमतों में अंतरण बढ़ा है, विशेष रूप से हाल के वर्षों में, जो घरेलू और वैश्विक पण्य-बाजारों में बढ़ती अंतरसंबद्धता को प्रतिबिंबित करता है (चार्ट 4)।

**चार्ट 3 : वर्ष 2009 के प्रारंभ से कीमत-स्तरो में उछाल आता है**



<sup>7</sup> इसमें शामिल खाद्येतर वस्तुएँ, धात्विक खनिज, अन्य खनिज, कोयला, एविपेशन टर्बाइन ईंधन, हार्ड स्पीड डीजल ऑयल,, नाप्था, बिटुमेन, फर्नेस ऑयल, लुब्रिकेंट, उद्योग के लिए बिजली, सूती धागे और कागज की लुगदी हैं जिसका डब्ल्यूपीआइ में भार 16.2% है।

चार्ट 5 : कारपोरेटों के लिए कच्चे माल की लागत में वृद्धि

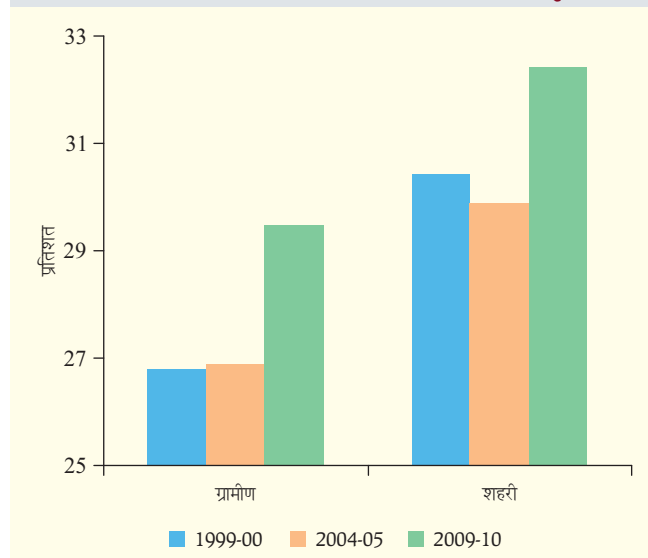


यह प्रवृत्ति कारपोरेट वित्त डाटा द्वारा भी परिपुष्ट होती है जो यह दर्शाती है कि कच्चे माल की लागत का हिस्सा व्यय और बिक्री, दोनों के प्रतिशत के रूप में बढ़ता रहा है (चार्ट 5)।

#### माँग-जन्य कारक

कीमतजन्य दबाव आपूर्ति पक्ष से उत्पन्न हो सकते हैं लेकिन इसे बढ़ती माँग के बिना कायम रख पाना मुश्किल होगा। इस संदर्भ में व्यय पैटर्न और मजदूरी में हाल की प्रवृत्ति के संबंध में महत्वपूर्ण जानकारी 66वें दौर के एनएसएसओ उपभोग सर्वेक्षण और श्रम-ब्यूरो से उपलब्ध होती है। ग्रामीण और शहरी केंद्रों दोनों में औसत वार्षिक

चार्ट 6 : खाद्यान्न उपभोग में प्रोटीन के हिस्से में वृद्धि

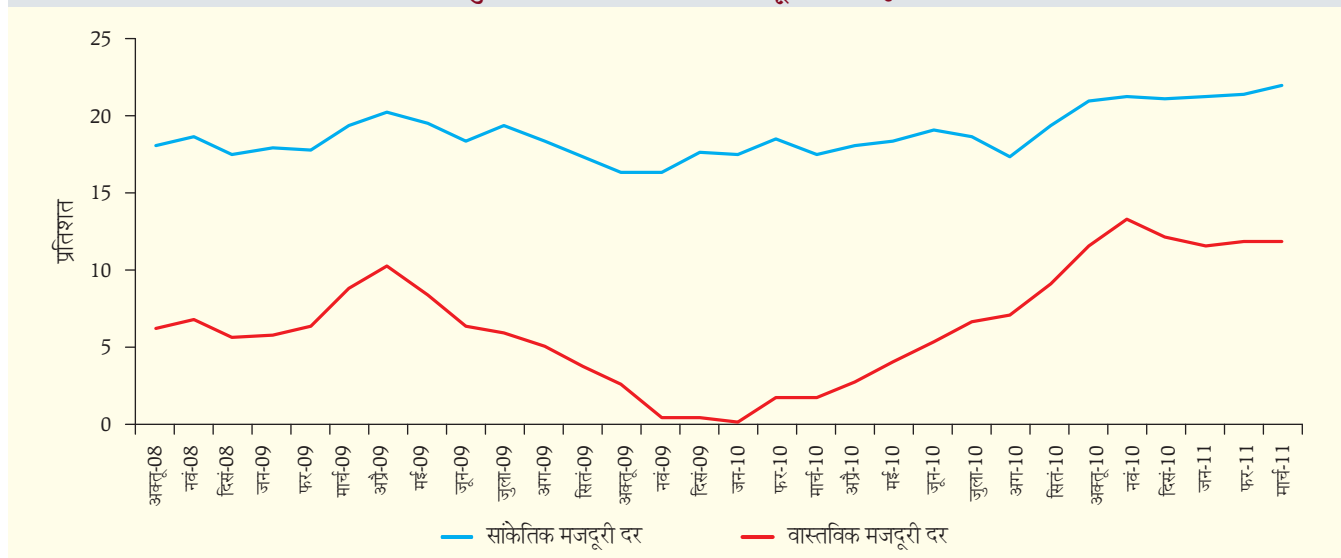


मासिक प्रति व्यक्ति व्यय में 2000 के दशक के प्रथमार्ध की तुलना में उत्तरार्ध में तेजी से बढ़ती सांकेतिक और वास्तविक दोनों संदर्भों में हुई (सारणी 6)।

जबकि खाद्यान्न पर प्रति व्यक्ति व्यय का हिस्सा ग्रामीण और शहरी दोनों केंद्रों में कम हुआ है, आहार-पैटर्न प्रोटीन के पक्ष में गया है जिसका हिस्सा बढ़ गया है (चार्ट 6)।

अकुशल ग्रामीण श्रमिकों की मजदूरी की दरों में वृद्धि सांकेतिक और वास्तविक दोनों संदर्भों में होने से ग्रामीण उपभोग कायम रहता है (चार्ट 7)।

चार्ट 7 : अकुशल ग्रामीण श्रमिकों की मजदूरी दरों में वृद्धि होती है



**सारणी 6 : मासिक प्रति व्यक्ति व्यय**  
(औसत वार्षिक वृद्धि)

	(मिश्रित संदर्भ अवधि आधार)	
	2000-05	2005-10
<b>सांकेतिक वृद्धि</b>		
ग्रामीण	3.6	10.5
शहरी	5.3	10.9
<b>वास्तविक वृद्धि*</b>		
ग्रामीण	0.2	1.2
शहरी	1.3	2.0

\* ग्रामीण और शहरी आबादी के लिए वास्तविक वृद्धि की गणना क्रमशः सीपीआइ-एएल और सीपीआइ-यूनएमड, आधार 1999-00, का उपयोग करते हुए की जाती है।

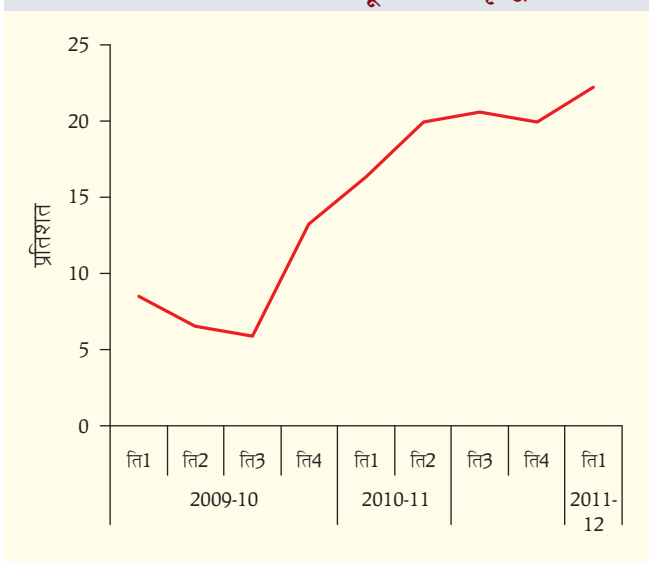
औपचारिक क्षेत्र में कंपनी वित्त डाटा इंगित करता है कि मजदूरी-बिल वर्ष 2009-10 के मध्य से तेज दर पर बढ़ा है (चार्ट 8)।

एनएसएसओ सर्वेक्षण (61वाँ दौर और 66वाँ दौर) के अनुसार ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में कुशल कामगारों की सांकेतिक मजदूरी दरें 2000 के दशक के प्रथमार्ध की तुलना में उत्तरार्ध में तेज गति से बढ़ीं। जबकि 2000 के दशक के प्रथमार्ध में वास्तविक मजदूरी दरों में गिरावट आयी उत्तरार्ध में यह महत्वपूर्ण रूप से बढ़ी (चार्ट 9 और 10)।

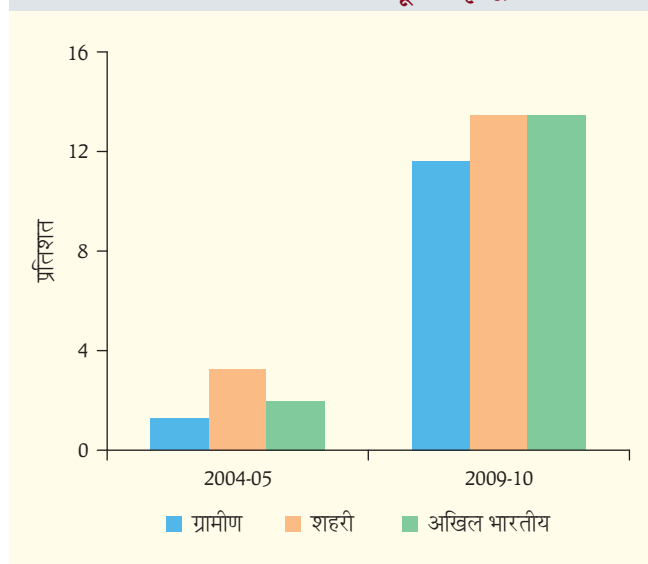
संकट-प्रेरित राजकोषीय विस्तार से भी इसे और प्रोत्साहन मिला है क्योंकि राजकोषीय समेकन प्रक्रिया का प्रत्यावर्तन वर्ष 2008-09 में किया गया जो वर्ष 2009-10 में जारी रहा (चार्ट 11)।

एक साथ मिल कर ये सारे साक्ष्य इस बात की ओर इंगित करते हैं कि हाल के वर्षों में औपचारिक और अनौपचारिक दोनों क्षेत्रों में वास्तविक मजदूरी में सतत वृद्धि ने माँग की वृद्धि में योगदान किया।

**चार्ट 8 : कारपोरेट मजदूरी बिल में वृद्धि**



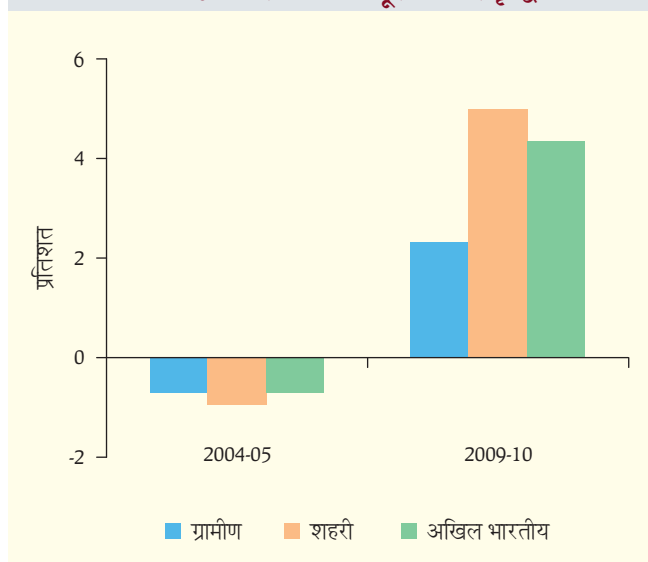
**चार्ट 9 : सांकेतिक मजदूरी में वृद्धि**



### उपसंहार

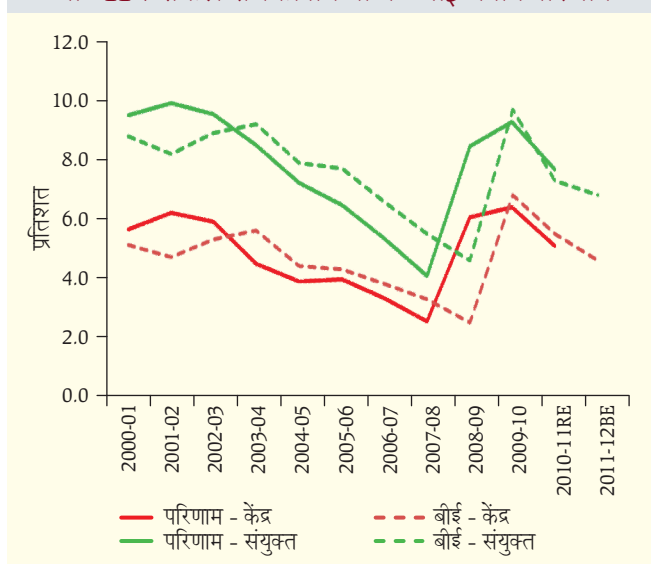
मुद्रास्फीति में हाल का उछाल अधिक साधारणीकृत हो गया है। खाद्य-मुद्रास्फीति जो आपूर्ति आघात-प्रवण होती है, भी संरचनात्मक लक्षण ग्रहण कर रही है जिसका कारण है आहार संबंधी आदतों में परिवर्तन और उच्च माँग का होना जो पर्याप्त आपूर्ति प्रतिक्रिया की अनुपस्थिति में होता है। खाद्येतर विनिर्मित उत्पाद मुद्रास्फीति में तेज वृद्धि यह इंगित करती है कि उत्पादक उच्चतर माँग को देखते हुए लागत में वृद्धि को आगे बढ़ा देने में समर्थ हैं। जबकि खाद्येतर विनिर्मित उत्पाद मुद्रास्फीति में ऊँची दृढ़ता है, खाद्य-मुद्रास्फीति की दृढ़ता बढ़

**चार्ट 10 : वास्तविक मजदूरी में और वृद्धि**





चार्ट 11 : सकल राजकोषीय घाटा - बीई बनाम परिणाम



गयी है जिसने समग्र मुद्रास्फीति-दर को निश्चल बना दिया है। अतः वर्तमान मुद्रास्फीति प्रक्रिया आपूर्तिजन्य बाध्यताओं और माँगजन्य दबाव दोनों का मिश्रण है।

लंबे समय तक ऊँची मुद्रास्फीति, भले ही उसका उद्भव आपूर्ति पक्ष से हुआ हो, बढ़ी हुई मुद्रास्फीति-प्रत्याशाओं को उत्पन्न करती है और सामान्य कीमतों को बढ़ाने का कारण बनती है। अच्छी तरह से लगाम नहीं लगायी गयी मुद्रास्फीति प्रत्याशाएँ दीर्घावधि वाली वित्तीय आयोजना को जटिल बना देती हैं जिनका संभावित प्रतिकूल प्रभाव निवेश और वृद्धि पर पड़ता है। इसके अतिरिक्त, उच्च मुद्रास्फीति कराधान का सर्वाधिक प्रतिगामी रूप होती है, खास कर निर्धनों के संबंध में। अतः यह महत्वपूर्ण है कि मुद्रास्फीति को बढ़ने से रोका जाये और मुद्रास्फीति प्रत्याशाओं पर लगाम लगायी जाये ताकि उपभोक्ता अल्पावधि की उम्मीद से अधिक मुद्रास्फीति पर प्रतिक्रिया करते हुए अपनी दीर्घावधि की मुद्रास्फीति प्रत्याशाओं को न बढ़ा दें।

मुद्रास्फीति के मूल्य को और इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि उच्च मुद्रास्फीति सतत वृद्धि के लिए हानिकर होती है, रिजर्व

बैंक का मध्यावधि उद्देश्य मुद्रास्फीति को नीचे ला कर उसे 3.0 प्रतिशत करना है जो भारत के विश्व-अर्थव्यवस्था के साथ व्यापक एकीकरण से सुसंगति रखता है। इस दिशा में मौद्रिक नीति का लक्ष्य मुद्रास्फीति-बोध को 4.0-4.5 प्रतिशत की सीमा में रोक कर रखना है जिसमें खाद्येतर विनिर्माण घटक पर खास ध्यान देना है जिसे इसकी दृढ़ता के उच्च अंश को देखते हुए कोर मुद्रास्फीति के रूप में माना जाता है। आगे वैश्विक और घरेलू, दोनों ही कारक मुद्रास्फीति दृष्टिकोण को रूपाकार देंगे। बढ़ते वैश्विक एकीकरण के साथ वैश्विक पण्य-कीमतों का अधिकाधिक महत्वपूर्ण प्रभाव घरेलू कीमतों पर होता है। यह उम्मीद है कि वर्ष 2011 में वैश्विक पण्य-कीमतों में वृद्धि होगी जो घरेलू मुद्रास्फीति के दृश्य-विधान में कुछ राहत देगी।

रिजर्व बैंक ने अपने संकट-प्रेरित विस्तारक मौद्रिक नीति दृष्टिकोण में प्रत्यावर्तन का संकेत अक्टूबर 2009 में दिया था। तब से आरक्षित नकदी निधि अनुपात (सीआरआर) को 100 आधार अंकों तक बढ़ाया गया है। नीति रेपो दर में भी संचयी 325 आधार अंकों तक वृद्धि की गयी। चूँकि प्रणाली में चलनिधि की स्थिति अधिशेष से कमी की ओर गयी, अतः कारगर कठोरता 475 आधार अंकों तक बढ़ायी गयी। इस प्रकार संचयी मौद्रिक नीति कार्रवाई का वांछित प्रभाव मुद्रास्फीति पर होगा।

जबकि यह उम्मीद है कि मुद्रास्फीति वर्ष के बाद वाले हिस्से में नरम होगी जो मौद्रिक कठोरता और वैश्विक पण्य कीमतों में संभावित नरमी को प्रतिबिंबित करती है, राजकोषीय नीति को समग्र माँग को थामे जाने का समर्थन करने की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त, संरचनात्मक आपूर्ति बाध्यताओं के मुद्दे पर अविलंब ध्यान दिया जाना आवश्यक है, खास कर कृषि में, ताकि ये दीर्घावधि में बाध्यकर मजबूरियाँ न बन जायें जिससे मुद्रास्फीति के प्रबंधन का कार्य बाधित होगा।